International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 13-01-2019; Accepted: 24-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 98-100

मध्यकाल में खजुराहो अंचल में नगरीय बसाहट व चन्देल कालीन नगर व ग्राम का ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० नृपेन्द्र सिंह परिहार
प्राचार्य, डी.आर.एस. बी.एड. कालेज, गंगापुर, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र में मध्यकाल में खजुराहो अंचल में नगरीय बसाहट व चन्देल कालीन नगर व ग्राम का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। पांचवी सदी से 17वीं सदी तक के काल को मध्यकाल कहा जाता है। 405 ई. में फाहयान भारत आया था। खजुराहो नगर के प्रमाण हमें 740 ई. से 14वीं शदी तक मिलता है। चन्देल कालीन खजुराहो नगर चन्देल संस्कृति के विशाल मानसरोवर में खिले हुए कमल वन सा एक पवित्र आयाम दिखाई देता है। चन्देलों का मूल स्थान छतरपुर जिले में मनियागढ़ था किन्तु वारीगढ़, कालिंजर, अजयगढ़, मड़फा, मौद, गोर, ओंम, महियर को मिलाकर उनके कुल 8 गढ़ थे। जिसमें से सिलालेखों में केवल कालिंजर और खजुराहो का ही उल्लेख मिलता है। चन्देल कालीन शिलालेखों एवं ताम्रपत्रों से हमें खजुराहो के आस–पास कई चन्देल कालीन नगर एवं बस्तियों का उल्लेख मिलता है, जिनमें बड़ी संख्या में आद्यावधि मौजूद है।

मूल शब्द : मध्यकाल, खजुराहो अंचल, नगरीय बसाहट, चन्देल कालीन।

प्रस्तावना
खजुराहो नगर की उत्पत्ति एवं विकास का श्रेय पूर्णरूप से चन्देल शासकों को जाता है। इस नगर का विकास 740 ई. से 14वीं शदी तक तीव्र गति से हुआ किन्तु 14वीं सदी के बाद मुस्लिम आक्रमणों के कारण यह नगर क्रमशः पतन की ओर अग्रसर हुआ। चन्देल कालीन खजुराहो नगर चन्देल संस्कृति के विशाल मानसरोवर में खिले हुए कमल वन सा एक पवित्र आयाम दिखाई देता है। खजुराहो नगर का उन्नत इतिहास हमें आज भी खजुराहो नगर के मंदिरों में उनकी विशेषताओं, वास्तु शिल्प कला के क्षेत्र में मस्तक ऊँचा करके खड़ा हुआ दिखाई देता है। 950 से 1050 के मध्य चन्देल राजाओं के शासन काल में बने 84 से अधिक देव मंदिरों में 20 मंदिर आज भी इच्छा स्थित में खड़े अपने उन्नत इतिहास का दर्शन करा रहे है।
मध्यकालीन खजुराहों नगर के अंचल में यहाँ कई नगरों के विशेष मिलते है।[1] एक मत के आधार पर चन्देलों का मूल स्थान छतरपुर जिले में मनियागढ़ था।[2] किन्तु वारीगढ़ कांलिजर, अजयगढ़ मड़फा, मौद गोरा ओर महियर को मिलाकर उनके कुल 8 गढ़ थे। जिनमें से शिलालेखों में केवल कालिंजर और अजयगढ़ का ही उल्लेख मिलता है। इनमें से अजयगढ़ भव्य प्रसादों, कालिंजर अभेद्य दुर्ग और खर्जुरवाह (खजुराहो) अपने सांस्कृतिक वैंभव के लिए प्रसिद्ध था। सन् 800 से 1300 ई. तक इस वंश में 30 शासक हुए जिनमें हर्षदेव (लगभग 910 ई.) और त्रैलोक्य वर्मा (लगभग 950 ई.) परमार्दि (लगभग 1165 ई.) यशोवर्मन, धंग आदि प्रतापी शासक थें, इनके शासन काल में खजुराहो नगर का विकास बहुत तीव्र गति से हुआ।

खजुराहो अंचल में चन्देल कालीन नगर व ग्राम

काशिका
धंग के वि.सं. 1055 के नान्यौरा ताम्रपत्र[3] से ज्ञात होता है कि चंदेल शासक ने अपने माता पिता की पुण्यवृद्धि के लिए काशिका ग्राम का दान दिया था। इसके साथ ही (2) पुल्ली (3) ऊशरवाह और (3) दुर्वाहरा नगरों का भी उल्लेख मिलता है।

तर्कारिका
इस नगर का उल्लेख वि.सं. 1059 के खजुराहो विश्वनाथ मंदिर के अभिलेख[4] से हुआ है। भोजवर्मा कालीन अजयगढ़ प्रस्तर अभिलेख[5] में भी इस नगर का नाम प्राप्त होता है।

पद्यावती
कोकल्ल देव के खजुराहो अभिलेख[7] से ज्ञात होता है कि कोकल्लदेव ने पद्यावती नगर बसाया था।

राजपुर आस्था
देव वर्मा के नन्यौरा ताम्रपत्र[8] में इसका उल्लेख मिलता है।

रणमउवा
पूर्वोवत अभिलेख[7] से इस ग्राम का ज्ञान होता है।

नवराष्ट्र मंडल
देववर्मा के चरखारी ताम्रपत्र[9] से इसका अभिज्ञान होता है। इसकी पहचान हमीरपुर जिला के राठ नगर से की जाती है।[10]

दादरी
इसका उल्लेख मदनवर्मा के ताम्रपत्र[11] में है, यह ग्राम किसी ब्राह्मण को दान में दिया गया था। यह हमीरपुर के महोबा तहसील में स्थित है।

कोटितीर्थ
इसी ताम्रमत्र[12] में कहा गया है कि देव वर्मा ने कोटितीर्थ में स्थान कर पूर्वोक्त ग्राम का दान किया। यह कोटि तीर्थ आद्यावधि कालिंजर दुर्ग में विद्यमान है।

कीर्तिगिरि
वि.सं. 1154 के देवगढ़ प्रस्तर अभिलेख[13] से ज्ञात होता है कि कीर्तिवर्मा चंदेल के मुख्यमंत्री वत्सराज ने कीर्तिगिरि दुर्ग का निर्माण कराया था। यह देवगढ़ है, जो ललितपुर जिला मुख्यालय से 33 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।[14]

बान्दिउरी विषय
उक्त ताम्रपत्र[15] के वान्दिउरी विषय की पहचान बांदा से की है।

यह ग्राम सागर ललितपुर मार्ग पर स्थित है। यह स्थल चन्देल युगीन प्रतीत होता है।

कोटियाग्राम

अजयगढ़ प्रस्तर अभिलेख[15] (वि.सं. 1208) से ज्ञात होता है कि कोटिया ग्राम निवासी राउतवेद ने जयपुरदुर्ग में कुछ निर्माण कार्य कराया। यह सतना जिला की भूतपूर्व कोठी रियासत प्रतीत होती है।

देद्दू

उपर्युक्त अभिलेख[16] से विदित होता है कि मदनवर्मा के प्रधानमंत्री गदाधर ने देद्दू ग्राम में एक तालाब और विष्णु मंदिर बनवाया था।

केंडी

उपर्युक्त अभिलेख [17] में केंडी नामक स्थान पर भी एक सरोवर का निर्माण कराया था। इसका अभिज्ञान आधुनिक (गढ़ कुण्डार) से किया जा सकता है। यह ग्राम टीकमगढ़–सेंधरी मार्ग पर निवारी से 21 कि.मी. दूर है। यहाँ के तालाब को अब सिन्दूर सागर कहते है। स्थानीय जनता इसे मरमर्दिदेव द्वारा निर्मित बताती है। अतः पूर्ण संभावना है कि इसका निर्माण मदनवर्मा द्वारा कराया गया है।

खटौड़ा द्वादशक

संभवतः इस ग्राम में समीपवर्ती क्षेत्र के बारह ग्राम सम्मिलित थे। कार्टलियरी ने इसकी पहचान बीकोर के दक्षिण पूर्व स्थित खुटौरया ग्राम से की है।[18]

दुधै विषय

इसका अभिज्ञान दुधई से करते है। यह स्थान देवगढ़ से 30 कि. मी. और ललितपुर जिला मुख्यालय से 50 कि.मी. हैं। यहाँ पर चन्देलकालीन एक मंदिर में छह छोटे अभिलेख प्राप्त हुए है।

महिसणेह या महिसनेह पत्तला

मदनवर्मा के भारत कला भवन ताम्रपत्र[19] (वि.सं. 1992) में इस पत्तला का उल्लेख है। यह मऊ सहानियां है जो हरपालपुर–छतरपुर मार्ग पर नौगांव से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां पर मात्रा में चन्देलकालीन अवशेष प्राप्त हुए है।

ककरदह

के. एन. दीक्षित इसकी पहचान ललितपुर जिला में बेड़वाड़ा के दक्षिण पूर्व स्थित ककडवा से करते है।[20]

सोनसर

चंदेल मरमर्दि का सेमरा ताम्रपत्र सोनसार शिविर से प्रवर्तित किया गया था। यह आधुनिक सोरई है जो ललितपुर जिला में स्थित है।[21]

वारिदुर्ग

उपर्युक्त ताम्रपत्र में वि.सं. 1219 में वारिदुर्ग समावास से मदनवर्मा चन्देल द्वारा जारी किये गये एक दान का उल्लेख है। यह स्थान छतरपुर जिला की लौड़ी तहसील में स्थित वारीगढ़ है।[22]

नौगांव भट्टाग्रहार

दान प्राप्तकर्ता सेनापति मदनपाल शर्मा के पूर्वज नौगांव भट्टाग्रहार के निवासी कहे गये है।[22] अगर यह भट्टाग्रहार विवेच्य क्षेत्र में था तो इस नाम के यहाँ अनेक स्थान है। इसलिए इसकी पहचान छतरपुर जिला की नौगांव तहसील में स्थित नैगुवां ग्राम से की जा सकती है। यहां की अधिकांश जनसंख्या ब्रह्मणों की है।

टेहरी

त्रैलोक्य वर्मा के टेहरी ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि चन्देल नरेश ने टेहरी ग्राम में निवास करते हुए सिंहदौणी सैन्यशिविर में विवेच्य दानपत्र जारी किया गया है, यह टीकमगढ़ के समीप स्थित टेहरी या टेहरी बानपुर है।[20]

मदनेशसागरपुर

पूर्वोक्त अभिलेख में मदनेशसागरपुर का उल्लेख है। यहां एक चैत्यालय का निर्माण कराया गया। यह टीकमगढ़ जिला का आधुनिक अहार है, जो टीकमगढ़ बल्देवगढ़ मार्ग पर टीकमगढ़ से लगभग 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ मदनेशसागर नाम का सरोवर अद्यावधि विद्यमान है।[18]

बसुहाटिका

उपर्युक्त मूर्तिलेख में बसुहाटिका का नाम मिलता है। वसु+आठ और हाटिका = बाजार अर्थात ऐसा स्थान जहाँ आये दिन बाजार भरता रहा हो। यह छतरपुर जिला का बक्सवाहा प्रतीत होता है। यहां अब बुधवार और रविवार को बाजार भरता है। यहां से 2 कि.मी. की दूरी पर बीरमपुर नाम का उजड़ा ग्राम है। यहां पर पेड़ों का धन्धा करने वाले बसदेवा लोग रहते है अनुश्रुति है कि यह एक विकासशील ग्राम था। संभव है पुराना बक्सवाहा यहीं रहा हो।[13]

निष्कर्ष

चन्देलों की राजधानी खजुराहो के सम्बन्ध में हमे कई अभिलेखिका एवं अनुश्रुतिमूलक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। चन्देल वंश का पहला शासक नन्नुक था, इसके पश्चात् नान्नुक का पुत्र वाक्यपति नान्नुक का उत्तराधिकारी हुआ। ऐसा खजुराहो लक्ष्मण मंदिर अभलेख से विदित होता है।

खजुराहो नगर के प्रमाण हमें 740 ई. से 14 वीं शदी तक मिलता है। चन्देल कालीन खजुराहो नगर चन्देल संस्कृति के विशाल मानसरोवर में खिले हुए कमल बन सा एक पवित्र आयाम दिखाई देता है। चन्देलों का मूल स्थान छतरपुर जिले में मनियागढ़ था। कीर्तिवर्मा के पश्चात् क्रमशः सल्लक्षण वर्मा, जया वर्मा, पृथ्वी वर्मा जैसे दुर्बल चंदेल शासक हुए जिनके काल में खजुराहो नगर का विकास नही हुआ। पृथ्वी वर्मा का उत्तराधिकारी मदनवर्मा एक समर्थ चंदेल शासक प्रतीत होता है। इसके शासन काल में राजनीतिक स्थिरता एवं सम्राज्य में शान्ति तथा सुव्यवस्था बनी रहने के कारण अनेक मंदिरों, सरोवरों तथा जैन मंदिरों का निर्माण खजुराहो तथा आस पास के क्षेत्रों में हुआ।

चंदेल काल में खजुराहो नगर में शान्ति तथा सुव्यवस्था थी। देश धनधान्य से परिपूर्ण एवं सुखी था, आर्थिक दृष्टि से तीन वर्ग थे – धनिक, मध्यम और निम्न वर्ग। कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। कृषि के अतिरिक्त लोग विभिन्न व्यवसाय के द्वारा अपना जीवनयापन करते थे। वणिक, स्वर्णकार, मणिहारक, ताम्रकार, कर्मचकार, तन्तुवाय, दर्जी, कुम्भकार, रज्जु निर्माता, चर्मकार, बर्द्धकि, मूर्तिकार, स्थापित, बैद्य, महानाचनी, नापित, माहर, चाण्डानल, मृतम, घसियारे, ताम्बुलिक, कन्दुक, तैलिक, श्रमिक, राजसेवा आदि का उल्लेख है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, के.एल., विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल.
2. तिवारी, पूनम चन्द्र, खजुराहो महाकाव्य, पृ. 9
3. इण्डि. एण्टि. जिल्द पृ. 203, पं. 6–11.
4. एपि. इण्डि. खंड 1, पृ. 333, पं. 1.
5. एपि. इण्डि. खंड 13, पृ. 290

6. एपि. इण्डि. खंड 1, पृ. 151
7. इण्डि. एण्टि खंड 16, पृ. 206, पं. 6–7
8. एपि. इण्डि. खंड 20, पृ. 126, पं. 14
9. अग्रवाल, के.एल. विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल पृ. 107
10. एपि. इण्डि. खंड 32, पृ. 122, पं. 21
11. एपि. इण्डि. खंड 20, पृ. 114, पं. 14
12. इण्डि. एण्टि खंड 16, पृ. 237–39
13. अग्रवाल, के.एल. विन्ध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल, पृ. 108
14. अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो, पृ. 161
15. आ.स.रि.खण्ड 21, पृ. 49.
16. एपि. इण्डि. खंड 1, पृ. 202, पं. 27
17. एपि. इण्डि. खंड 1, पृ. 202, पं. 28
18. एपि. इण्डि. खंड 1, पृ. 157, पं. 7
19. एपि. इण्डि. खंड 4, पृ. 157, पं. 8
20. अग्रवाल, के.एल. वि.क्षे. ऐ. भू., पृ. 115.
21. अग्रवाल, के.एल. वि.क्षे. ऐ. भू., पृ. 116.
22. अग्रवाल, के.एल. वि.क्षे. ऐ. भू., पृ. 117.